चौकीदारी

हम इन्जीनयर, डाक्टर, नेता, बनिये, दुकानदार, साहूकार, क्लर्क इत्यादि सभी के सभी चौकीदार बन के रह गये हैं। आप पूछेंगे यह कैसे हो गया ।

चौकीदार की क्या परिभाषा हैं, उस पर ध्यान दें । चौकीदार वह होता है जो दूसरों की धन दौलत व वस्तुओं की रक्षा करता है, उसके बदले मे उसे तनखा भी मिलती है। आज हम सभी धन व चीजों को एकत्र करके उनकी रक्षा कर रहे हैं कभी-कभी अपने प्राणों की आहुति देकर भी, इसके बदले हमे तनखा भी नहीं मिलती है। हम क्या रह गये हैं? क्या किसी चौकीदार से कम हैं? हम सभी प्रार्थना करते हैं आरती भी रोज करते हैं - 'तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ' - यह तो तय है कि दुनिया की चल और अचल सम्पत्ति के मालिक भगवान के अलावा कोई और नहीं हैं । इस नाते जो भी सम्पदा हमारी कहलाती है, अस्थाई है। यदि हम सब इस अस्थाई सम्पदा की चौकीदारी में दिन रात लगे रहतें हैं तो हुए न हम सब चौकीदार ?

अगर हमे अपने मालिक भगवान पर भरोसा है तो जितना हमारा है हमारे पास रहेगा उसे कोई नहीं ले सकता है । और ध्यान देने योग्य बात है कि मैं चौकीदारी के खिलाफ हूँ चौकीदारों के नहीं । पैसा कमाने व खर्चने के खिलाफ बिलकुल कुछ भी नहीं कह रहा हूँ । खूब कमाईयें इस्तेमाल कीजिये पर भविष्य के बारे मे जरा यथार्थवादी होकर सोचिये, जब आज हम कमा पा रहे हैं तो कल इसी तरह हमारे बच्चे क्यो नहीं कमा लेंगे जब जरुरत होगी। इसी तरह यह सोचना कि यदि हमने ज्यादा धन एकत्र कर लिया या ज्यादा चीजें तो हम ज्यादा खुश होगे इस बात को जरा गहराई से सोच कर देखियें कि क्या सच है ।

जरूरी धन भी एकत्र कीजिये पर घर पर नहीं। वरना आपको सर्प की भाँति कुन्डली मार कर चौकीदार बन कर उसकी रक्षा करनी पडेगी । वह आपकी सेहत के लिये अच्छा नहीं होगा क्योकि कोई भी चौकीदार रात को ठीक से सोता नहीं हैं दिन मे ही सोता है । रात को उसे जागना ही पडता है। तो दिन में आपको जागना ही है और रात मे धन व माल की चौकीदारी मे जागना पड़ेगा । तो आप सोएँगे कब ? और नहीं सोएँगे तो बीमार पड़ जाएँगे।

भारत में एक ऐसी जगह है जहाँ पर आज भी कोई अपने घर में ताला नहीं लगाता है यह शनि महाराज का गाँव महाराष्ट्र में है । मैने खुद अपनी आँखों से देखा है । क्लाइव ने भी अपनी रिपोर्ट में यही लिखा था कि भारत में घरों मे कोई किवाड़ों में ताला या कुन्डा तक नहीं लगाता है फिर भी चोरी इत्यादि नहीं होती हैं । हम सब राम राज्य की कल्पना करते हैं पर सोचते हैं कि यह हो ही नहीं सकता है तो कैसे होगा यह सब् ।

जनाब चौकीदारी छोड़िये ओर हालातों के साथ रहना सीखिये । यदि चोरी हुई भी और कुछ चला भी गया तो क्या यह अन्त है कि आप फिर नहीं खरीद सकते या उन चीजो के बिना भी काम चल सकता है यह आप मान लें । क्योंकि अगर इतना जरूरी होगा तो जैसे उस परमपिता परमात्मा ने पहले दिया फिर दे देगा पर यदि आपको उस पर पूरा विश्वास है तो। यदि नही है, आप खुद कर रहें हैं तो ढोईये साहब यह वोझा भी जैसे आप ही सब कुछ कर रहे है, अपनी दुनिया चला रहे हैं ।

हमने तो उसके ऊपर छोड़ रक्खा है। वही कर्ता हैं वही धर्ता हैं, हम तो बस वहाना मात्र हैं और हमें इसी में गर्व है कि हम उस परमपिता की इच्छा से चलाए जा रहे हैं इसलिये कहीं भी आने जाने में स्वतन्त्र हैं ।

उ० र० रो० भारत यात्रा के दौरान 1 जनवरी 2007.